

40

पंचदेव

जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-17-1

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 40
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

घरवास

चारि बजे भोरेसँ दुनू भैंयोँ ‘नवीन आ किशोर’ आ दुनू दियादनियोँ ‘मणिका आ प्रेमा’ आ माइयो ‘कमला काकी’ ओछाइन छोड़ि-छोड़ि उठि चारू दिसक काजमे जुटि गेल। चारू दिस काज, अँगना-घर बाहरैसँ लऽ कऽ फूल तोड़ब, ठाँउ करब, माल-जालकेँ घरसँ बाहर करब इत्यादि इत्यादि। तैसंग ऐगला काज करैले सेहो अपनाकेँ तैयार केने...।

ओछाइनपर पड़ल सुवल काका मने-मन सोचैथ जे आइ केमहर सुरूज उगला जे सभ किछु बदलल-बदलल बुझि पड़ैए। आन दिन अपने छह बजेमे ओछाइन छोड़ै छेलौं तँ देखै छेलौं जे सभ ओछाइने धेने अछि आ आइ की बात छिऐ जे चारि बजे भोरेसँ सभ बीन-बीन केने घुड़ैए..!

सुवल काकाकेँ बुझल नै जे आइ घरवास छी, बुझलो केना रहितैन, घरमे जखन रहिते छैथ तखन बास की भेल..?

मुदा मनकेँ थामि रखने छैथ जे कियो जखन किछु पूछत तखन ने किछु बाजब। भने ओहो सभ बुझैए जे सुतले छैथ। मुदा कमला काकीकेँ चुप भेल नै रहल गेलैन, रहलो केना जइतैन। सभ घरवासक ब्योंतमे लागल आ हिनका कोनो धैनियेँ ने छैन। दरबज्जापर आबि पतिकेँ उठबैत बजली-

“घरमे धुमसाही काज अछि आ अहाँ अखन तक सुतले छी?”

एक तँ भिनसुरका समय तैपर पत्नीक दुतकार सुनि सुवल काका बजला-

“कोन धुमसाही काज घरमे आएल आ हम बुझबो ने केलौं?”

पतिक बात सुनि कमला काकीकेँ जेना अस्सी मन पानि एक्केबेर मनमे पड़ि गेल होइन तहिना भेलैन। जे घरक सिरिष छैथ हुनके नै बुझल छैन! कहू ई केहेन भेल? हम पत्नियेँ भेलिऐन, नवीन आ किशोर बेटे भेलैन, पुतोहुकेँ छोड़लो जा सकैए, मुदा जइ परिवारमे घरक सिरिषकेँ पत्नियेँ आकि बेटे नै पुछ करैन हुनक मन केहेन कलपैत हेतैन...।

फेर नजैर अपनापर पड़लैन। दुनू बेटा तँ सहजे अपना-अपना काज-रोजगारमे लगल रहैए, अपनो काज आ धियो-पुतो, परिवारोक चिन्ता करए पड़ै छै, बिसैरयो गेल हएत। बिसरबो कोनो अनरगल नहियेँ भेल। काज-उदेममे वौड़ा गेने अहुना होइ छै...। नीको काज नजैरसँ उतैर जाइ छै, मुदा अपने तँ से नै छी। घरे-अँगनामे रहैवाली छी, तखन जँ एना भेल तँ अपनाकेँ दोखी होइसँ केना बँचा सकै छी। मुदा अपन दोखो मानैक सोभाव तँ लोकमे एहेन ऐछे जे घोरन आकि चुट्टी जकाँ जेतए पकड़त ओ पकड़नहि रहि जाएत, भलेँ अधडड़ेरेपर सँ किए ने टुटि कऽ जान गमा लिअए।

तहिना कमलो काकीकेँ भेलैन। बेटा दिससँ नजैर उतारि पुतोहु दिस देलैन। कोनो कि हमहींटा आँगनमे रहै छी, बुढ़-पुरान भेलौं, बिसैरयो गेल हएब मुदा ई दुनू ‘पुतोहु’ तँ से नै अछि। तहूमे जाबे घरक भार दुनू परानीपर छल, जइमे बेटा-बेटीक सेवा, पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ बिआह-दानक छल, से तँ निमाहबे केलौं, आब तँ ओ सभ अपने करबारी भेल तखन हमरा कोन मतलब अछि जे अनेरे दोखी बनब। अपनाकेँ निरदोख बुझि कमला काकी बजली-

“दुनू भैंयोँ आ दुनू पुतोहुवोक बीच हमहूँ छेलौं तेहीमे विचार भेल जे एकादसीए दिन घरवासो लऽ लेब आ किछु उधवो-बाधव कऽ लेब।”

सुवल काका काजक पारखी तँए मुँहक ओते महत नहियेँ दैथ मुदा चालि-ढालिसँ आगम बुझिते रहैथ। नजैर ओइठाम गरौने रहैथ जे काज नीक करए आकि अधला मुदा समयकेँ जँ काजमे लगौने रहल तँ काजे ओकरा सीखबैत रहतै जे नीक केना होइ छै आ अधला केना भऽ जाइ छै...। तँए मन समगमपर सुवल कक्काक रहबे करैन। तहूमे चारिमपनक पत्नी आ भिनसुरका समय सेहो पइर लागिये गेल रहैन बजला-

“मर्र ई की भेल! जइ घरमे रहिते छी तइ घरक बास हएत। खाएर जे हौउ। आरो की सब हएत?”

‘आरो की सब हएत’ पाछूसँ बाजल रहैथ तँए कमला काकीक ऊपरक मनमे खुशी भेलैन, मुदा जखन पैछला बातक सोर पकैड़ पाछू दिस बढ़ली तँ मन धुमनाइन हुअ लगलैन। धुमनाइनक माने आगिपर देल धुमनक सुगन्धो आ धुमनाहा आमक जे सुआद होइ छै सेहो, दुनू कमला काकीकेँ मन पड़लैन। एके रस्तामे कटारियो आ टाटो लगौल रहने चलनिहारकेँ ओइठाम अँटैक आगूक रस्ता जहिना हियाबऽ पड़ै छै तहिना कमला काकी हियबैत बजली-

“जेठका बेटो आ जेठकी पुतोहुवोकेँ बहू-दिनसँ मनमे छेलै जे चौपहरा पूजा करब।”

एक तँ सत्-नारायण भगवानक पूजा तहूमे चौपहरा, सुनि सुवल कक्काक मन गद्-गद् होइत जाइन मुदा कमला काकीक परेशानी बेसियाएले जाइत रहैन। बेसियेबो केना ने करितैन, परिवारक ति-मुहाँनीपर बैसल ने कमला काकी छेली। एक दिस पिता-पुत्रक बीच, दोसर- माए-बेटाक बीच आ तेसर- पति-पत्नीक बीच। दूटा बाँसकेँ कनोतब असान होइ छै, मुँह मिला कऽ बान्हि देबै, मुदा तीनटा बाँसकेँ

कनोतब माइए सन कलाकार बान्हि सकै छैथ, मुदा गर लगबैमे तँ किछु नजैरक काज पड़िते छै तँए कमला काकीकेँ गर अँटबैमे कनी-मनी परेशानी होइत रहैन...।

काकीक परेशानी देख सुवल काका बजला-

"जेठजन आ जेठजनीक विचारसँ ने चौपहरा पूजा हएत, आ छोट-जनक?"

'जेठ' 'छोट' सुनि कमला काकीक विचारलाहा काज फुड़फुड़ेलैन। फुड़फुड़ाइते बजली-

"जेठ जन-जनीक तँ एकमुहरी विचार भेल चौपहरा पूजा, मुदा छोट जन-जनीक बीच मन-भेद भऽ गेल।"

'मन-भेद' सुनि सुवलो कक्काक मन सेहो फुड़फुड़ेलैन। अकचकाइत बजला-

"की मन-भेद भेल?"

पतिक जिज्ञासा देख कमला काकी माए-बेटा आ सासु-पुतोहुक सीमापर ओझरा गेली। ओझरा ई गेली जे दुनू दियादनीक अपन माए तँ हमरे ने पुतोहु बना बेटीकेँ पठौलक। जँ पुतोहु-जनीक मनमे किछु कमना हेतैन तँ ऐ घरमे नै पुरतैन, तँ आन घरमे थोड़े पुरतैन। दोसर दिस ईहो होइन जे बेटाक बात पुतोहु सोझा-सोझी नै मानि रहल अछि, तखन एहेन पुरुखकेँ टीक पकैड़ झुलौत की नै...।

असमंजसमे कमला काकीकेँ पड़ल देख सुवल काका, सम्हारैत बजला-

"अनेरे अहाँ मनकेँ विसविसाइन-विसविसाइन केने छी, ओकरे सबहक ने घर छिऐ तइले अहाँ किए एते तबाह छी?"

पतिक बात सुनि कमला काकीक मनक बोझ कनी कमलैन।

बजली-

“किशोरक मन छै जे दस मुरते भनडरो करब?”

‘भनडारा’ सुनि सुवल काका बिच्चेमे टोनलैन-

“केहेन बढ़ियाँ तँ विचार छै, तइले मन-भेद किए हएत। जाबे दस मुरतेक भनडारा घरमे नै भेल ताबे घरवास केना भेल! भनडरे ने भण्डार भरै छै!”

कक्काक बात सुनि काकीक मन कनी खरहर भेलैन। जहिना मसुआएल अन्न खापैड़मे पड़ने खरहर होइत तहिना बजली-

“छोट जनीक मन छैन जे आन समाजक बेटी छी तँए समाजक दस गोरेक बीच हमहूँ किए ने अपना भानस करैक लूरिक परीछा दइए दिऐ। फेर कहिया भाँजपर काज औत कहिया नहि।”

सभ रंगक विचार सुनि सुवल कक्काक मन चढ़ि गेलैन। बजला-

“एक दिनमे एते काज केना सम्हरत?”

योजना आयोगक प्रमुख सदस्य जकाँ कमला काकी अपन योजना प्रस्तुत केलैन-

“आइ सतनारायण भगवानक चौपहरा पूजा हएत। दोसर कोनो काज नै हएत। पूजेक विहित पुरबैत-पुरबैत सभ समांग तबाह रहब। तैबीच दोसर केना सम्हरत?”

काजक ठेकनगर गर देख सुवल काका बजला-

“घरवासो हएत आ सतनारायण भगवानक पूजो हएत। तहूमे कहै छी जे दिनेसँ पूजा शुरू हएत। घरवास तँ रातिके होइ छइ।”

सुवल काका जे बात बाजए चाहै छला से नै बाजि विचारक रूप पत्नीमे देखैत फेर बजला-

“सतनारायण भगवानक पूजा तँ कोनो जग भेला पछाइत होइए,

तखन?”

ओना, सुवल कक्काक प्रश्नमे केतौ कोनो ओझरी नै रहैन, मुदा काजक दिन रहितो पत्नी केते समय गमबै छैथ, मन तैपर रहैन। काजसँ पहिने तँ तीनपहरा पूजा हएब शत-प्रतिशत सधाएल रूप भेल। साँझुक पूजा तँ विसरजनक भेल। तैबीचमे घरवास हएत।

जेना महजालकेँ समेट कियो एके बेर हाँसूसँ काटए लगैए तहिना कमला काकी सभ ओझरीकेँ काटैत बजली-

“काज-उदेममे अहिना होइ छइ। तँए आगू-पाछूक हिसाब नै होइ छै, काजक हिसाब होइ छइ।”

पत्नीक बात सुनि सुवल काकाकेँ सवुर भेलैन। मुदा तैयो एकटा झटहा सबुरदानाक गाछक घौरपर फेकैत बजला-

“हमरा तँ बुझले ने छेलए, खाएर जे भेल से नीके भेल। अखनसँ कि हमहूँ केतौ जाएब थोड़े, तँए हमरो नाओं काजकरतेमे लिखि लेब।”

पतिक उपस्थिति मनक डायरीमे दर्ज करैत कमला काकी बजली-

“धिया-पुता केना करै छै, से तँ देखबै किने।”

नअ बजे पूजा प्रारम्भ भऽ जाएत। चारि पहरक दिनमे तीन पहर पुराएब अछि। चारिम पूजा तँ साँझमे हएत। अपन काजक नीवित बुझि नवीन माइयो, भाइयो आ दुनू दियादनियोंकेँ एकठाम समेट बाजल-

“चौपहरा पूजा छी, अद्दी-गुद्दी नै छी। तँए सभ देह-झाड़ि कऽ लागब तखने पार लगत।”

एक तँ ओहुना सबहक विचार पहिनहिसँ रहबे करैन, तैपर नवीनक विचार सुनि आरो सभ चौकन्ना भेल। नवीन पूजापर बैसत, तँए सहए पड़तै। एक दिस काजक बढ़ोतरी आ दोसर दिस खेनाइ-पीनाइमे कटौती हेबे करतै! से खाली नवीनेटा लेल नै भेल। मणिका केना नै

पतिक संग पुरती, ओहो भरि दिन निराहारे रहैक विचार पहिनहिसँ कऽ नेने छेली। आँगनमे पूजा हएत भैंसुरो आ जेठ दियादनियोँ भरि दिन सहती आ छोट दियादनी- 'प्रेमा' केना उपास नै करती, तँए ओहो सहती। मुदा किशोर तँ करबारी छी, तहूमे आइ काजो दोहरा गेल, अपन वेपारक काजक संग-संग परिवारक काज सेहो छै...।

अपन स्वतंत्र विचारक काज केनिहार लेल तँ जटिल समस्या उपस्थित नहियेँ होइए मुदा सभ काजो तँ एके रंग नहियेँ होइ छइ। स्वतंत्र काज किछु एहनो होइए जइमे दोसरक हस्तक्षेप नै होइ छै, आ किछु एहनो तँ होइते अछि जइमे होइ छइ। ओना, नोकरी केनिहारकेँ अलग ढंगक जिनगी होइ छैन। छुट्टी भेटला पछाइत ड्यूटीसँ पूर्ण स्वतंत्र भऽ दोसर काज करै छैथ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे परिवारमे पैघ-सँ-पैघ आकि जरूरी-सँ-जरूरी काज किए ने हुअए, जेकर दरमाहा लइए, पहिने ओकर काज करए पड़ै छइ।

जहिना नवीन तहिना दुनू दियादनियोँ भरि दिन सहती। जे बात किशोरो बुझलक। मुदा बुझैमे कनी फेड़ भऽ गेलै, फेड़ ई भेलै जे करबारी बुधिये सोचलक तँए उपासक महत्-क बात बुझबे ने केलक। मनमे भेलै जे जखन भनसिया अपने ने खाएत तखन भानसो तँ तहिना ओंघाइत करत, तइसँ नीक जे नहियेँ खाएब। भने ईहो तँ भइये जाएत जे सबहक संग पुरलौं।

भैयारीमे तँ बात फरिया गेल। जे चारू गोरे 'दुनू भैंयोँ आ दुनू दियादनियोँ' भरि दिन उपासल रहत। बीचमे पाँचम माए, तहूमे सीमा परक भेली। जखन बेटा-पुतोहु सहत आ बीचमे अपने खाएब से माएकेँ नीक नै लगलैन। अपने फुड़ने बाजि गेली जे हमहूँ उपास करब। पाँच गोरेक उपाससँ दिनमे चुल्हे किए पजरत तहूमे घरवासो छी। मुदा एक गोरे 'सुवल काका' तँ बाँकीए छैथ। तहूमे चुल्हिक पूजा तँ ओहन पूजा छी जे एक गोरे रही आकि दस गोरे, प्रक्रिया एके रंग हएत...।

भानस करैसँ अपन जान बँचबैत प्रेमा सासुकेँ हाथक टुसकी देलैन-

“बाबुओ-जीसँ पुछि लथुन।”

एक तँ पुतोहुक टुसकी दोसर अपनो सहब कमला काकीकेँ हूबा बढ़ौनहि रहैन। टुसकी पबिते काकी, काका लग पहुँच बजली-

“आइ चुल्हि नै पजरत, से पछाइत किछु बजबै नहि।”

परिवारक सबहक विचार सुवल काका दरबज्जेपर सँ कान ठाढ़ कऽ सुनि नेने रहैथ। बजला-

“आइ घरवास छी तखन जँ चुल्हिये नै चढ़त तँ ओहेन घरमे लोक बास कए दिन कऽ पौत?”

सुवल कक्काक बात नीक जकाँ कमला काकी नै बुझली। मुदा बाता-बातीमे चुपो रहब तँ हारबे भेल। तहूमे दुनू परानीक बीच। भलें बाता-बातीमे महत विला किए ने जाउ।

बजली-

“साँझू पहर ने हएत, दिनका गप कहलौं।”

कमला काकीक सम्हार देख सुवल काका बजला-

“चुल्होकेँ कि सीमा-नाँगैर छै, ओइपर तँ केते रंगक समान बनैए, टटको बनबैए आ बसियो खाइबला बनबैए। टटका नै चढ़त तँ नै चढ़ह, कौल्हुको-परसुका चढ़लाहासँ तँ काज चलिते अछि। सएह करब।”

कक्काक जवाबमे काकी फेर भोथिया गेली। बजली-

“बाइस-तेबाइस केहेन खाइमे लागत?”

काकीक भँसियाएब काका बुझि गेला। बजला-

“ओइबेर जे बैजनाथसँ पेरा अनने रही से मन अछि किने जे छह मास तक टटकेक सुआदमे रहल।”

बुझल-गमल काज कमला काकीकेँ, तँए कनी सहैम गेली। मुदा निर्णय तक तँ पहुँचबे छेलैन। बजली-

“ई तँ कहिया कतक गप भेल। मुदा आइ की करब से कहू।”

सुवल काका बुझि गेला जे भरिसक कोनो दोसर काज दिस नजैर चलि गेलैन तँए अगुता रहली अछि। बजला-

“जखन सभ उपासे करब तँ हमरे-ले किए चुल्हि पजारल जाएत। अखन ते घरमे चूड़ो ऐछे, दहियो ऐछे, चीनियोँ ऐछे, केरो ऐछे तखन बाँकीए कथी रहल जे भूखल रहब।”

बेटा-पुतोहु लग अपन जीतैत पाशा देख कमला काकी बजली-

“जखन सभ उपासे करत तँ बीचमे अहीं किए खाएब?”

मुस्की दैत सुवल काका बजला-

“आब कोन दिन-ले उपास रहि जोगा कऽ राखब। खाइते-पीविते रामलला।”

घरवासक संग चौपहरा पूजा सुवल काका ऐठाम छिऐन, से गुल-गुली तीन दिन पहिनहिसँ गाममे गुलगुलाइत, ओना, यज्ञ-जपमे हकारक प्रथा अदौसँ आबि रहल अछि। मुदा जेना-जेना लगिचाएल अबैत तेना-तेना गामक धीओ आ पुतोहुओक बीच पूजाक उपास करैक विचार बढ़ल जाइत। तैसंग ईहो विचार मनमे उठिते जे जखन सत्-नारायण भगवानक उपास करब तखन जँ निअम-निष्ठासँ नै करब तँ ओइ उपासक महते की? जँ कियो दिन-राति झूठेक खेती करए आ एकटा बात कखनो सते बाजि लिअए तँ ओइ बातक असरिये केते हएत...। तँए, केते गोरे जखनेसँ सुनलक तखनेसँ अशुद्ध भोजन, अशुद्ध बोल आ अशुद्ध काजक तियाग करैत अपनाकेँ पूजाक समय अबै धरि पुजेगरी रूप बनबए लगल।

एक तँ गाममे अखन तक माने बीस बर्खक बीच ने कियो सत्-नारायण भगवानक चौपहरा पूजा केलैन आ ने कियो उपास केलैन, तँए

उपास केनिहारि लेल एकटा नव संकल्प सेहो भेल। नव संकल्प ई जे पूजा वीहिते लोक अपन नीक जिनगी बनेबाक संकल्प लइए। अहुना अपना ऐठाम ठेकनाएल उपास 'जन्माष्टमी, रामनवमी, शिवराति इत्यादि' ऐछे मुदा किछु एहनो तँ होइते अछि जे बेठेकनाएल सेहो होइए। अनको ऐठाम सत्-नारायणक पूजा भेने आनो-आन भरि दिन सहि भगवानक चरनोदक परसाद पेला पछाइते अन-जल करैए। ओना, एकपहरा पूजाक चलैन बेसी रहने सहनिहारि सभ बहुत बिसरियो गेल छैथ मुदा चौपहरा पूजाक उपास तँ सहजे पहिले-पहिल हएत, तँए ई लोक थोड़े बिसरत...।

जहिना चारि पहरक दिन आ चारि पहरक रातियो होइ छै, तहिना ने लोकोक जिनगी बँटाएल अछि। दू जिनगीक जोड़ जहिना नअ बजे दिनसँ नअ बजे राति धरि अछि तहिना ने नअ बजे रातिसँ नअ बजे दिनो अछि। चौपहरा पूजा सेहो दिन-रातिक जोड़क प्रक्रिया छी।

आइ एकादसी सेहो छी, भने दुनू उपास संगे हएत, सुखठीक वेपार आ पशुपतिनाथक दर्शनो हेबे करत। मुदा एकमुहरियो गाममे बाधा तँ रहिते अछि। सरधा दीदीक मन सोल्हो-अना उपास करैक छैन मुदा दुनू परिवार–सरधा दीदीक परिवार आ सुवल कक्काक परिवार–क बीच नोत-हकार सभ बन्न अछि। कोनो बाते झगड़ा भेलैन कहा-कहीमे कहा गेलैन जे अहाँक छाँह देने नै चलब। दुनू ऐपर अड़ि गेला, जइसँ पाबैनक बेनसँ लऽ कऽ बेटा-बेटीक बिआहो-दानमे आएब-जाएब बन्ने छैन।

मुदा तैयो सरधा दीदीक मन परिवारक सभ झगड़ाकेँ फानि विचारि लेलैन जे सत्-नारायण भगवान किनको बाँटल छैन, सबहक छियाह तखन किए ने उपास करब। मुदा लगले मन अँटैक गेलैन जे भरि दिन सहला पछाइत बिनु चरनोदक-परसाद मुँहमे नेने केना उपासक पारन करब..!

दीदीक मन ओझरा गेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जखन

डोराक ओझरी हौउ आकि डोरीक, अपन दुनू हाथे भलेँ नै सोझराए मुदा दोसर-तेसर हाथ पड़ने तँ सोझराइए जाइए, यएह सोचि सरधा दीदी लाल काकीक आँगन जा कहलखिन-

“भौजी, किछु छी तँ समाजक चौपहरा पूजा छी, केना नै उपास करब।”

बिच्चेमे लाल काकी टोनि देलखिन-

“एकरा के काटत?”

‘काटब’ सुनि सरधा दीदीक हूबाक संग मनसूबो बढ़लैन। बजली-

“एहनो तँ भइये सकैए जे अहाँकेँ जे चरनोदक परसाद भेटत, तेहीमे सँ कनी-मनी हमरो दऽ देब।”

दीदीक सोझराएल विचार सुनि लाल काकी बजली-

“एना किए मुँह दाबि बजै छी, सतनारायण भगवान केकरो बाँटल छिऐन, हुनका नीविते जे पूजापर चढ़ल ओ सबहक भेल। तइमे मेख-रोखक की परियोजन।”

लाल काकीक विचार सुनि सरधा दीदीक मनमे ओहने खुशी भेलैन जेहने दूर गेनिहारकेँ लगक संगी भेट गेने होइत। लगक संगीक माने ई जे संगीक उच्चतम् अवस्था। तही बीच पूजाक हकरिया हकार दिअ पहुँच गेल। बाल-बोध हकरिया, कोनो कि सरधा दीदीक परिवारक झगड़ा ओकरा बुझल रहै, बहादूर नोकर जकाँ सौंसे गाम हकार परसैक रहै, सरधो दीदीकेँ किए छोड़त। सोझहेमे सरधो दीदी आ लालो काकी रहबे करैथ, तही बीच हकरिया हकार बाँटि गेल...।

ओना, हकार देबाक चलैन एक दिन पहिनुक अछि, नै हएत तँ उपास केना हएत। ई भेल समाजक बीच सत्-नारायण भगवानक पूजाक। मुदा से नै भेल नवीनक मनमे नै आएल। तँए बिसैर गेल। पछाइत मन पड़लै तँए हड़बड़मे जे सोझहामे पड़ल तेकरे हकार दिअ पठा

देलक।

हकार पाबि सरधा दीदीक मनमे खुट-खुटी उठलैन। खुट-खुटी ई जे बाल-बोधक फूसि बाजब जहिना फूसि नै छै तहिना तँ सत्तोक हएत। माने ई जे जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप करखनो नीको बात सीखबैए आ रातिमे जखन ओछाइनपर गंदा कऽ दइ छै तखन ओइ नीक बातकेँ उनैट अन्हारकेँ देखबैत ओकरा भूत कहिते छैथ, जइ डरसँ बच्चा माए संग छोड़ि, जाबे माए कलपर सँ पानि आनि ओछाइन धोती आकि ओछाइने बदलती ताबे असथिर रहैए आ तहिना बिजलियोबला घरक माए आन-आन बौलकेँ मिझा एकटा रखै छैथ। तेकर कारण ई जे मल-मूत्र तियागला पछाइत मन हल्लुक होइ छै, तहूमे नबका हाथ-पएरबलाक। जेमहर-जेमहर जाएब तेमहर-तेमहर ओहो जेबो करत आ उकठपनो करबे करत, जइसँ छोटो काज नमहर बनैत जाएत, तँए ओकरा भूतक आड़ि माने अन्हार-इजोतक आड़ि दऽ राखए पड़ै छइ। जेहेन लाल काकीक मनमे खुशी रहैन तइसँ दब दीदीक बुझि पड़लैन। खसल मन देख लाल काकी बजली-

"मन उछट करू। चरनोदको आ परसादोक बात आब थोड़े रहल, आब तँ हकार पौनिहारि भेलौं। आब कि कोनो बाधा रहल जे कियो चौपहरा पूजाक उपासकेँ काटि देत।"

लाल काकीक उत्साहित बात सुनि सरधा दीदी मनक विकार बोकैर देलैन-

"कहुना भेल तँ बाल-बोधेक हकार भेल किने..!"

सरधा दीदीक बात सुनि लाल काकीक मन जेना विचारकेँ धकैल देलकैन। बजली-

"एक तँ समाजक बीच चौपहरा पूजा, तहूमे जैठाम सतनारायण भगवानक पूजाकेँ, समाजक बहिन, बेटी अपन-अपन संकल्पक उपास

करि पूजाक आरो शोभा बढ़बैत, तैठाम जँ कोनो बिहंगरा ठाढ़ हएत तँ की हम मुँह तकैत रहब... ।”

लाल काकीक विचार सुनि सरधा दीदी बजली-

“किछु भेल तँ समाजक धारमे बहब भेल किने। जैठाम लोक जिनगी-मृत्युक बीचक बाट पकैड़ गंगा-यमुना-सरस्वतीक संगमपर पहुँचए चाहैए।”

हँसी-खुशीक वातावरणमे चौपहरा पूजो आ घरवासोक काज सम्पन्न भेल। आब कि घोरूआ परसादक चलैन रहल जे बेसी तरद्दुत करए पड़त। काजो हल्लुके भऽ गेल अछि। पूजाक तीन दिनक पछाइत आइ भनडारा हएत। काज तँ झमेलिया अछिए। झमेल ई जे किशोरक पत्नी ‘प्रेमा’क काज पछुआ गेल। कहलो जाइ छै- भोजक आगू जँ खेबा-पीबाक बिनु बनौल समान सठि गेल तखन तँ हमर विचार मनेमे मरि गेल किने? मुर्दघटीक बरियाती जकाँ ने भेल। मुदा तँए कि वेचारीकेँ संग नै पुरए पड़तै, तहूमे अपन पतिक आराधना छिऐन। ओना, तैयो अदहा काजक विचारी तँ भेबे केली... ।

प्रेमे जकाँ दुनू परानी नवीनक बीच सेहो विचारक झमेल उठबे कएल। सत्-नारायण भगवानक पूजा अगुआ कऽ हम केलौं, सभ मिलि निमाहलौं, तहिना तँ परिवारेक काज ईहो ने भेल। यएह ने भेल जे किशोरक मनक उपज छिऐ, तँए जँ ओ अपना विचारसँ करत तँ अपन बुझि अपना जकाँ काज करत, से बेसी नीक हएत। जे ओकरे काजक भार सुमझा अपने सहयोगी बनि जाए। तँ बेसी नीक हएत... ।

काजक दौड़, तँए सभ एकमुहरी भऽ पहिने काजक मुँह-मिलानी करए एकठाम बैसल। बैसते नवीन किशोरकेँ कहलक-

“बौआ, औझुका काज तोरा मनक छिअ, तँए तोंही ऐ काजक अगुआ भेलह। हम सभ पीठपोहू रहबह।”

नवीनक विचारक कनोजैर पकैड़ते कमला काकीक मुँह अलगलैन। बजली-

“बौआ, गाममे दू रंगक लोक अछि। भनडाराकेँ लोक वैष्णव भोजन मानैए। बिल्कुल शाकाहारी। तँए समाजमे जेते वैष्णव छैथ ओतेककेँ भनडारा कऽ लैह। आ पुतोहुजनीक जे मन छैन जे अपन लूरिक परीछा दिऐ, तँ शाकाहारीसँ मांशाहारी धरिक भोज परसू कऽ लेब।”

कमला काकीक विचारकेँ मणिका दहलाइत देख बजली-

“माए, पानिमे माँछ आ नअ-नअ कुटिया बखरा, अनेरे करै छैथ। आइ जइ काजक दिन छी पहिने तेकरा सम्हारि लोथु। अखन औझुका काजक ने विचार करती।”

मणिकाक विचारसँ कमला काकीक मनमे मिसियो भरि दुख नै भेलैन। बजली-

“देखहक, एक पंथक लोक दोसर पंथक ने छुबल खाइए आ ने एक पाँतिमे बैस बातो-विचार करैए, तँए असथिरसँ विचार करए पड़तह जे एको गोरे गाममे छुटैथ नहि।”

कमला काकीक विचार सुनि चारू गोरे, दुनू भैंयों आ दुनू दियादनियों अकबका गेल। अकबका ई गेल जे जखन सभ वैष्णवे भेला तखन एक-दोसरमे बारा-बारी किए अछि? मुदा प्रश्न ई तँ नै जे किए अछि, प्रश्न तँ ई भेल जे समाजमे एहेन अछिए। जहिना लोक जाति-पाँतिमे बँटल अछि, तहिना ने पंथो-पंथाइ तँ बँटले अछि। तखन की करब? ने कमला काकीकेँ जवाब फुड़ैन जे काजकेँ सुतिया आगू बढ़ौती आ ने दुनू भैंयेकेँ।

ओना, किशोर दुनू परानी वेपारसँ जुड़ल अछि, गाम-समाजक बेवहारक बात नै जनैए तँए कोनो बात नहि। ओना, अछि दुनू परानी

पढ़ल-लिखल मुदा जिनगीक काज बदलने जीवनोक किछु काज तँ छुटबे करै छै, से भेल। मुदा तइसँ कियो समाजक किरिया-कलाप वा रीति-नीतिसँ छुटकारा पाबि जाएत सेहो नहियेँ अछि। खाएर जे अछि, मुदा भैयारियोमे आ मतो-पिताक आगू तँ बच्चे भेल...।

पाँचो गोरेक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। गुमा-गुमी देख किशोर नवीनकेँ कहलक-

“भैया, अहाँ शिक्षक छी पढ़ौनीक काज करै छी, तखन किए चुप छी?”

किशोरक बात सुनि नवीनकेँ तामस नै उठल। मने-मन किशोरक विचारकेँ गौर करए लगल। मुदा कोनो विचारकेँ निर्णय तक पहुँचबैमे दोहरी कारक अछि, पहिल बुझल आ दोसर बिनु बुझल। नवीनकेँ ने बुझल आ ने बुझैक दिशा-बोध, जइसँ किछु अनुमानो करैत। जहिना दिशा बोधबला दिशा पकैड़ डेग आगू बढ़बैत जाइए, मुदा बिनु दिशा बोधबला केमहर डेग बढ़ौत से बोधे ने रहै छै, जइसँ बेसी भोतियेबेक डर रहै छइ। नवीनोक मनमे सएह भेल, तँए परिवारमे दोखी बनैक डरसँ मोटा पटैक बाजल-

“जखन घरमे श्रेष्ठजन छैथ तखन कोनो नव काज करैसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत। तँए बाबूकेँ पुछि लेब नीक हएत।”

पिताक नाओं सुनि कमला काकीक मनमे अपन बड़प्पनक बोध भेलैन, जइसँ ललौन गुलाब जकाँ चेहराक रंग बदललैन। मुदा बजली किछु ने। पतिक विचारकेँ पाछूसँ ठेलैत मणिका सासुकेँ कहलैन-

“एना मुँह चोरौने हेतैन? जाबे काजक विचार नीक जकाँ नै कऽ लेती, ताबे काजमे हाथ लगतैन?”

दू-दिसिया सोंगर जहिना घरकेँ सोझ करैए तहिना कमला काकीक मन सेहो सोझ भऽ गेलैन। बजली-

“ओहो , की कियो आन छैथ, जे पुछैमे धरी-धोखा हएत, हमहीं बाजब, मुदा सबहक रहब बेसी नीक हेतह।”

सुवल काकाकेँ कमला काकी पुछलखिन-

“गाममे रंग-रंगक वैष्णवजन छैथ, एक-दोसर लग ने बैस कऽ खेता आ ने बनौल खेता, तखन केना हेतइ?”

कमला काकीक बात सुनि सुवल काका मने-मन विचारए लगला। विचारए ई लगला जे समाजमे एहेन प्रश्न तँ अछिए। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जँ एहेन अछि तँ एहनो तँ ऐछे जे एक सामूहिक रूपमे आ दोसर खण्ड रूपमे बेकतीगत सेहो अछिए। बेकतीगत रूपमे ई जे, एक मुरते, दू मुरते फुटा कऽ सेहो होइते अछि। पंथाइक झगड़ा जेतए छै तेतए रहौ, मुदा ऐठाम से तँ नै छी। घरवास छी, पथ-पथिक होथु आकि हेराएल-वौआएल बटोही होथु, सबहक आश्रयक आश्रम छी। तैसंग ईहो तँ छीहे जे समाजक बीच रहने समाजक सेहो छीहे। सोझराएल विचार मनमे ऐबते, बजला-

“दूध-माछक बाँतरक झगड़ा हौउ आकि सजमैन-कदीमाक भैंसुर-भावोक, हमरा ओइसँ कोन मतलब अछि। अपनेसँ जा कऽ सभकेँ दल दऽ अबियनु।”

जेना कमला काकी सुवल कक्काक बात बेसी बुझलैन तहिना किशोरकेँ कहलखिन-

“बौआ, अपनेसँ जा कऽ सभकेँ कहिहौन, जँ कियो किछु कहथुन तेकर विचार पछाइत हएत। अखन काजकेँ अँटकाबह नहि।”

कमला काकी जे बाजल होइथ मुदा सुवल काका बुझलैन जे भरिसक खाइ-पीबैक बात बजली। बातकेँ सम्हारैत बजला-

“बौआ, बेसीसँ बेसी कियो कहथुन जे अपने बना कऽ खाएब, तँ ओहो बढ़ियाँ। भने सभ वस्तु पुछि कऽ सुमझा देबैन। तइसँ ईहो हएत जे

जश-अजशक भागीसँ बँचि जाएब।”

सुवल कक्काक बात सुनि नवीन बाजल-

“बाबू, जखन जेहेन समय औत, तखन तइ ढंगसँ विचारि काज करब। अखन अगुआ कऽ किछु बाजब, बेसी हएत।”

सह दैत मणिका बजली-

“जहिना चौपहरा पूजामे हकार पुरए सभ एला, तहिना सभ औता। तँए पहिने किछु अनुमान करब, नीको भऽ सकैए आ अधलो भऽ सकैए।”

किशोर दल दिअ विदा भेल। ओना, गाममे सभ पंथक वैष्णवजन छैथ मुदा तीन स्तरमे बँटल छैथ। पहिल जे स्वच्छ-जन छैथ ओ अपनाकेँ भोज्य पदार्थसँ लऽ कऽ करनी-भरनी तक अपन संकल्पकेँ निमाहि रहला अछि तँए वैष्णवजन होइथ आकि वैष्णव-जनसँ वृहत होइथ देव स्वरूप मानव बुझि अपनाकेँ भक्त स्वरूप ‘गुरु-शिष्य हौउ आकि गुरु-चेला’ व्रत निमाहि रहल छैथ, मुदा एहेन जन कम छैथ। तँए ऐ बीच दल स्वीकार करैमे कोनो बाधा उपस्थित भेबे ने कएल। दोसर स्तरक जे छैथ, ओ घरक ओहन खुटा जकाँ छैथ जे सदिकाल ‘हवा उठौ आकि झाँट-पानि हौउ’ हिलडोल करैत रहता जइसँ घरो हिल-डोल करिते रहैए।

एहेनक संख्या बेसी रहने किशोरक सोझा बेसी प्रश्नो उठल। मुदा जहिना सुवल काका कहने रहथिन तहिना किशोर वैष्णव-जनक प्रश्न सुनि जवाब स्वरूप प्रश्न पुछैत-

“मनुखक समाजक मनुखक रूपमे भोजन करबए चाहै छी, तँए हँ-नइमे कहू।”

किशोरक प्रश्न, जन-जनकेँ जेना छातीमे बेध दैत तहिना अपन नचारी सुनबैत मानि-मानि लेलैन। ओना, किशोरकेँ समाजक बीच ईहो देखल-सुनल जे फल्लाँ, साले-साल भदवारिमे शीकपर कण्ठी रखि घरक

पछुआरमे टाँगल टौहकी-पहटा लऽ भदवारिक मौज-मस्ती कऽ लैत आ चर-चाँचर सुखिते, जेठुआ वैष्णव-बबाजी बनि अमैया भनडरो पुरि चद्दैर-टाका लऽ कऽ प्रतिष्ठितो बनि जाइत। तेतबे किए, एक पंथाइ जखन बुझैए जे हवा उनटल जाइ छै तखन जँ अपने नै गर घुमब तँ अनेरे धँसनो तरमे पड़ि जाएब, तइसँ नीक जे करे घुमि जाइ। तँए एहनो बबाजीक कमी नहियेँ अछि जे राजनीते जकाँ सतरहटा पंथाइ भोज-भात नै खेने हुअए। खाएर जे से...।

मुदा तेसर स्तरक तीनटा महंथनुमा छैथ। तीनूकेँ कटोरिया धोइध, बोनैया दाढ़ी जकाँ नै, दिनमे पचासो बेर ककही फेड़ल, मक्खन लगौल, बरह-बरखा कनियाँ जकाँ चानिपर खोपा, धपधपौआ एकरंगा वस्त्र, मुदा गामकेँ अपन खनदानी डीह बुझि सालमे दू-चारि दिन रहै छैथ, बाँकी समय स्थान सभसँ लऽ कऽ रेलेगाड़ीमे बीतै छैन...।

संयोग एहेन भेल जे तीनू महंथ गामेमे। जे बात सुवल काकाकेँ बुझल। मनमे रहैन जे नमक हरामीक संख्या जइ रूपे बढ़ि रहल अछि ओ समाजक लेल शुभ नहि। पहिने भेलैन जे भरिसक ओ सभ 'तीनू' अबैसँ कतरेता, जँ कतरेता तखन उपय? फेर मनमे उठलैन- भाय, जखने कियो जँ केकरो कोनो टाट लगा रोकैए आकि अपनो ओइ दिशामे तँ रोकाइये जाइए। तँए सुवल कक्काक मनमे एको मिसिया हिलकोर उठबे ने केलैन।

ओना, किशोरकेँ बुझले नै थनो परहक केलहा काज रहै जे अपन बिआही पत्नीकेँ, चारिटा बाल-बच्चा भेला पछाइत, रहैत दोसर बिआह करए लगल कि केसमे फँसि गेल। ओ बँचेलहा उपकारी छी। दोसर, जेकरा बिआहमे बरियातीक गवाह छी जे ओ बबाजी बनला पछाइत अपना हाथे अपना पत्नीकेँ दोसर बिआह करा संकल्प नेने जे बिआह नै करब। ओना, अखन धरि निमाहनौं अछि। तेसरो ओही उमेरक, मुदा पहिल दुनूसँ भिन्न। पहिल दुनू समाजसँ सोलहन्नी कटल मुदा तेसर से नहि। गाम-समाजसँ जुड़ल, ज्ञान-धियान करैत समाजक बीच अपन

हश्ती बरकरार रखने छैथ। तँए समाजक काज केनिहार स्वत: समाजसँ जुड़ल तँए तीनू नकार-नुकार केने बिना दल मानि लेलैन।

घरवासक दोसर प्रक्रिया, साधु भोजन सेहो भऽ गेल। ओना, पान-सात दिनक काजक झमार सभकेँ झमारि देने तँए आगूक काज दिस डेग बढ़बैक हिम्मते कमि गेल। मुदा परिवारोक यज्ञक तँ एक प्रक्रिया पछुआएले अछि। ओना, कमलो काकी आ सुवलो कक्काक मनमे रहबे करैन जे भैयारीक चारिम पौदानपर बैसल प्रेमा छैथ, तँए जहिना क्रमश: सबहक आराधनाक पूर्ति भेल, तहिना जँ चारिमोकेँ नै होइ ई तँ परिवारमे अन्याय हएत।

ओना, कमला काकीक नजैरसँ हटि गेलैन जे प्रेमा अपन लूरिक परीछा समाजमे दिअ चाहै छैथ, मुदा एते तँ रहबे करैन जे जहिना राम-लक्ष्मणक भैयारी तहिना ने सीतो-उर्मिलाक दियादनी। भलेँ सीतासँ बेसी उर्मिले किए ने मने-मन जरल होइथ, मुदा अग्नि परीछा सीतेकेँ ने दिअ पड़लैन।

ओना, सुवल काका काजक सुतिहार तँए मनमे नचैत जे तीनूक–नवीन-मणिका आ किशोर–आराधनासँ ओझरौठ आराधना छोटकी पुतोहुक छैन। जे बात मनमे छैन, ओकरा पुरबैमे बेसी समय लगत। बेठेकान समय। सालो भरि। भोज भलेँ चैतमे किए ने हुअए मुदा अचार जेठुए ने रहत। तहिना अदौरी फुसियेने-पनियेने मानत, जखन वएह मर-मसल्ला आ दालि मिलि विवाद उठौत तँ ओकर बर-बरीक हक नै देबै? तँए ओकरा आठ दिन पहिनहिसँ जँ नै पूजबै तँ अपन रंग थोड़े चढ़ए देत। धड़-फड़मे बरी गढ़ि लेब मुदा अमैनियाँ दालि बनबैमे बिनु गंग-स्नाने पवित्र थोड़े होइए...।

एक दिस जहिना पछुआ पकैड़ अँचार, अदौरी, बरी, बर रखने तहिना दोसर दिस दही कण्ठपर चढ़त जे टटका छोड़ि जखने बसिया

करमेँ तरवने तोरो मुँह बसियाइन होइत खटाइन कइये देबौ। मुदा जानए जअ आ जानए जत्ता। भाय, अराधैएकाल ने केकरो विचार कऽ लेबा चाही जे केहेन अराधै छी...।

प्रेमाकेँ कमला काकीक माध्यमे सुवल काका कहलखिन-

“कनियाँकेँ कहि दिऔन जे अपना काजक अगुआ अपने भेलौं, बाँकी सभ सहयोगी भेला, तँए अपन काजकेँ सुतियाएब शुरू करैथ”

पतिक विचारमे कमला काकी अपनो विचार फेंटैत प्रेमाकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, जहिना कोरपछू बेटी दुलारू होइ छै तहिना घरमे अहूँ भेलौं। नैहरमे जहिना माए-बापक बात-विचारमे रहै छेलौं तहिना ने हमरो लग रहब।”

जादूगर जहिना अपन खेल पसारैसँ पहिनहि देखनिहारकेँ नजैर बन्न कऽ दैत तहिना भावुक प्रेमाक नजैर बन्न भऽ गेल। कल्पना लोकमे पहुँच सासुक नजैर निहारि बुदबुदाएल-

“कियो पागल कहए आकि दिवाना, मुदा धरती तँ बादले बुझैए।”

समय मंगैत बाजल-

“माए, काज केतौ पड़ाएल जाइ छै, ओ तँ गुड्डी जकाँ अकासमे उड़ै छै, लपेटाक संग केना लपेटबै ओ तँ उड़ौनिहारेक काज भेल किने?”

ओना, सुवल काका दरबज्जेपर सँ प्रेमाक बात सुनि नेने रहैथ तँए बुझैमे केतौ बेवधान नै रहैन, मुदा एते तँ शंका मनमे उठिये गेल रहैन जे जइ माध्यमसँ जवाब औत, ओइमे किछु नून-मिरचाइ मिलाएले रहत। तँए अपना ढंगसँ बुझैक अछि। सएह भेल। कमला काकी प्रश्नोत्तर करैत पतिकेँ कहलखिन-

“कनियाँक मन बड़ खुशी देखलयैन।”

पत्नीक बातकेँ सुवल काका चौपेत कऽ मनमे रखि आगूक किरिया दिस नजैर फेकलैन। मनमे उठलैन प्रेमाक प्रेमिल विचार। एते पैघ आराधनाक साहस। अदौसँ माने जखन साग आश्रित मनुख छल तहियासँ लऽ कऽ बर-बरी धरिक जुटान, जे दालि उसनासँ बर-बरी बनैमे पचीसो-पचास हजारक जिनगी पौने अछि, जे कुशियार चीनी बनैमे हजारो बरख खेलक, एतेक जुटान बाल-बोधक खेल छी। देखा चाही, केनिहारिकेँ?

आराधनाक अनुकूल वातावरण भेटनौं प्रेमा धड़फड़ाएल नहि। चुप्पी साधि, पहिने भोजक विचार केलक। भोजक विचार ई जे, भोज्य-पदार्थ बढ़ने, भोजन विपरीत दिशामे बढ़ि अवघाती बनि गेल अछि। अधिक भोज्य पदार्थ अनुकूल-प्रतिकूल गुणोक तँ समावेश भइये जाइए। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे हमरा सन चारिम सीढ़ीक लोक, एते एकत्रित केना कऽ सकत। नान्हिटा अँचारे अछि फल-फलहरीसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारीक संग सागो-मुरै धरिक बनल अछि। सागेकेँ की कहबै। बरहमसिया छी, मुदा एके साग बारहो मास थोड़े हएत। अपन-अपन समैयक संग ने रंग पकड़ने अछि। जँ से नै अछि तँ ललका ठढ़िया रंग-बदलैत बेदरंग होइत हरिअर होइत उज्जर भऽ भुल्ला कहबए लगैए...।

अगममे बहैत प्रेमा अपन विचारकेँ दोसर दिस मोड़लक। मोड़लक ई जे एते वृहत पदार्थक बीच जँ गोटे चितकाबर भऽ जाइए, तइले एते लोक ढोल किए पीटत। ओकर नौतिकता ओहीमे छै, पचासो विन्यासक बीच पेट नै भरलै। यएह छी मिथिलाक गौरव जे खाइकाल नै बाजी। एहेन समाजमे नीको काज तँ अधले दिस बढ़ि जाइए। तखन? तखन किछु ने, जे जुड़त तइसँ मनकमना पुराइए लेब। ने समाज केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने केतौ पड़ाएल जाइ छी। जिनगी रहत तँ दिनकेँ के कहए जे मिनटो-क्षण परीछेक घड़ी रहैए। तइले एते मनमे घमरथने किए...।

प्रेमाक आराधनाक भोजक परीछा सेहो भइये गेल।

भोजक दस बजे राति, सभ काज समाप्त भऽ उसैर गेल। सभ कियो अपन-अपन ओछाइनपर पहुँच गेल। सुवल काका, काकीकेँ पुछलखिन-

"पचास बर्खक संगी तँ ओहूँ भेलौं किने, ऐ बेरक घरवास कैअम छी?"

पतिक प्रश्न सुनि कमला काकी जिनगीक पैछला छोर पकैड़ पाछू मुहेँ ससरैत सासुरक पहिलवास लग पहुँच गेली। पहुँच गेली ओतए जेतए पहिल दिन गाममे प्रवेश केली। मनमे उठलैन- यएह देह छी, तीनटा टटघर आ एकटा भीतघरमे बसै छेलौं, तेहेन रौदी भेल जे घर छारल नै गेल। तीन सालक अँटकल पानि डूम्मा बरिसल। एकोटा घर दढ़ नै रहल जेतए चैनसँ रहि सकितौं।

मुदा समय बदलल, नार हटा खपड़ा देलिऐ। निच्चाँ भीत ऊपर खपड़ा, सतासीक बाढ़िमे भीते खसि पड़ल। जिनगीमे अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए, मुदा आइक परिस्थितिकेँ अनुकूल जिनगी बनबैक खगता तँ ऐछे...।

खपड़ाक पछाइत भीतघरो आ टटघरोपर एस्वेस्टस चढ़ौला पछातिक घरवास सुवल काका आ कमला काकीक छेलैन। तँए मनमे ओते उत्सुकतो नहियेँ। मुदा ई तँ खुशी भेबे केलैन जे अपना अछैते अगिलोक बास भेल।

❑ **साभार : रटनी खढ़**

भूल

प्रख्यात दार्शनिक वरटेण्ड रसेल अपन जीवनीमे लिखने छैथ, जे हमर पहिल स्त्री सचमुच विचारवान छेली। जखन ओ मन पड़ै छैथ तखन हृदए दहैक जाइए। दुनू गोरेक बीच अगाध प्रेम छल। एक दिन कोनो बाते दुनू गोरेक बीच अनबन भऽ गेल। खिसिया कऽ हम बिनु खेनहि ऑफिस विदा भऽ गेलौं। रस्तामे एकाएक मनमे उपकल जे अपन क्रोधक बात पत्नीकेँ कहि दिऐन। रस्तेसँ घुमि गेलौं। घुमि कऽ घर एलापर पत्नी घुमैक कारण पुछलैन। हमर क्रोध आरो उग्र भऽ गेल। हम कहलयैन-

"आब अहाँले हमरा हृदैमे मिसियो भरि जगह नै अछि।"

पतिक बात सुनि पत्नी स्तब्ध भऽ गेल मुदा किछु बाजल नहि। वेचारीक हृदैमे ई बात जरूर पकैड़ लेलकैन जे हमरा ओ -पति- कपटी बुझै छैथ। आइ धरि हम भ्रममे छेलौं।

दुनूक बीच फाँक बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। होइत-होइत पति पत्नीकेँ तलाक दऽ देलक। वेचारी रसेलक घरसँ सदा-सदाक-ले चलि गेली।

❑ **साभार : तरेगन**

बत्तीसोअना

शिवरातिक दिन। एकटा यात्री शीशीमे गाइक घी नेने कुशेश्वर स्थान जाइ छला। जइ गाइक घी छेलैन ओही गाइक कबुला केने छला जे 'जँ सुहरदेसँ गाए बिआएत तँ घी चढ़ाएब।' ओना, गाए बीएला पछाइत पचीस ग्राम घी, शुरूहेमे बना शीशीमे रखि नेने छला, मुदा तेकरा तीन सालसँ ऊपर भऽ गेल। ताबे गाए दोसरो बीआन बिआएल।

ओना, यात्री पढ़ल-लिखल सेहो छैथे। गामसँ कुशेश्वर धामक रस्तामे कमला आ कोसी दुनू धार पड़ै छैन। जइमे पुल नइ छै, नाहेपर लोक पार होइए। कोसी धार बेसी पेटगर अछि। ओना, पेटगर कमलो अछि, मुदा कोसीसँ कम अछि। धारक पानिक वेग दुनूक एकरंगाहे अछि, माने वागमती जकाँ असथिर गतिए नहि चलैए ओइसँ बेसी तेज गतिए चलैए। ओना, सभ धार गंगे दिसक रस्ता पकड़ने अछि, जे एक-दोसरसँ सटैत-सटैत पहुँचबो करिते अछि।

नाहपर दुइए गोरे छला, एकटा ओ पढ़ल-लिखल यात्री आ दोसर नाह खेबैत मलाह। उत्तरे-दच्छिने धार तँए पुबरिया भित्ता आ पछबरिया भित्ताक बीच नाह चलैत। पुरबरिया घाटपर ओ यात्री चढ़ला। ओना, धार तँ धारे छी मुदा सन्मुख धारा पछबरिया भित्ता पकैड़ नेने अछि, तँए आधासँ बेसी पुबरिया भागक धारक पानिक वेग सन्मुखसँ कनी कम

गतिए चलिते अछि। नाहपर बैसते यात्रीक मनमे खुशी भऽ गेलैन। हेबो केना ने करितैन। निच्चाँ पानि आ ऊपर पुर्बाक हल्फी तैपरसँ अधडरेड़ मास फागुनक सुहावन रंग चढ़ले छइ। ओना, सरस्वती पूजाक हिसाबे पचीस दिनक वसन्त सेहो भऽ गेल मुदा चैत-बैशाखक हिसाबे अखन वसन्तक जन्मो ने भेल छल। जे हौ.., धारक बीच नाह परक जे भिनसुरका मौसम अछि ओ तँ वसन्तोसँ वहार अछिए। जखन वसन्तक वसन्ती-हवासँ गाछो-बिरीछ कलशए लगैत, फुलाए लगैत तखन तँ मनुख-मनुखे छी किने। ऐगला मांगिपर पल्था मारि बैसल यात्री मलाहकेँ कहलखिन-

"भैया, तूँ फिजियोलोजी जनै छह?"

कानसँ तँ मलाह सुनलक मुदा उच्चारण मनमे उचरबे ने केलइ, जे कहितै फिजियोलोजीक विषय की छी? तँए वेचारा मलाह सुहरदे-मुहेँ बाजल-

"नइ।"

'नइ' सुनिते यात्रीक मन चढ़ल। चढ़बो केना ने करैत यएह ने छी जीत। जे जनैत अछि ओकर जीत भेल आ जे नइ जनैत अछि ओकर हारि भेल।

..चढ़ल मने यात्री बजला-

"तखन तँ तोहर पचीस प्रतिशत, माने चारिअना बुझहक कि चौथाइ, जिनगी पानिमे चलि गेलह!"

पचीस प्रतिशत तँ मलाह नइ बुझलक मुदा पानिमे चलि गेलइ, से तँ बुझबे केलक। मनमे एलै, जखन बारह बर्खक रही, बाप मरि गेल, तहियेसँ अही धारक पानिमे गुजरो करै छी आ दिवसो गमबै छी, तखन की भेल। मुदा प्रश्नक जवाब तँ देबेक अछि। बाजल-

"हँ से सएह।"

मलाहक जवाबमे यात्रीकेँ रस भेटलैन। रसाइत मने बजला-

“अच्छा, फिजियोलोजी नइ बुझल छह तँ कोनो बात नहि, साइकोलोजी जनै छह?”

मलाह बाजल-

“नइ।”

कोनो कि कोर्ट-कहचरी छिऐ जे बहसा-बहसी हएत, ऐठाम तँ एकटा पढ़ल-लिखल यात्री आ दोसर नाहक खेबैया- मलाह अछि...।

अपन निर्णय सुनबैत यात्री बजला-

“पचास प्रतिशत जिनगी भैया तोहर ओहिना चलि गेलह।”

मलाह बाजल किछु ने मुदा मुस्की मारलक।

यात्री फेर बजला-

“अच्छा भाय, जँ साइकोलोजी आकि फिजियोलोजी नइ जनै छह तँ कोनो बात नहि, बायोलोजी पढ़ल छह?”

मलाह मुहसँ किछु ने बाजल, खाली मुड़ी डोला देलक जे नइ। मुड़ी डोलबैक कारण भेलै जे कातसँ नाह सन्मुख धारामे पहुँचैपर भऽ गेल तँए नाहकेँ सिरा चढ़बैक रहइ।

यात्री बजला- “पचहत्तैर प्रतिशत जिनगी तोहर बेकार भऽ गेलह!”

यात्रीक बात मलाह किए सुनत ओ तँ अपन आँखि-कान सिरा चढ़ैत नाहपर लगौने रहए। यात्रीकेँ चेतबैत मलाह बाजल-

“भाय, तैयार भऽ जाउ। हेलए अबैए?”

यात्री बजला-

“नइ।”

यात्रीक उत्तर सुनि मलाह आगू किछु नइ पुछि अखन धरि जे

लग्गासँ खेबैत आएल छल ओकरा रखि मांगिक मथनीमे जे करूआरि बान्हि रखने छल, ओ दुनू हाथे दुनू करूआरिकेँ सिरा चढ़ैक सह दैत रहए। ओना, नाह अखन बीचो-बीच, माने सन्मुखक तेज धारा आ मरियाक मन्द धाराक सिरा चढ़ि रहल छल।

हिया-हिया मलाह अपन आरा देख रहल छल जे कोन ठामसँ कटौलापर नाह घाट पकड़त। मुदा घाटो पकड़ब की असान अछि। ओ तँ खाली नाहे सम्हारला-टासँ नइ होइ छइ। मौसमक रूखि सेहो देखए पड़ै छइ। ओना, जँ हवा शान्त रहल, धारक धाराक गति मद्धिम रहल, तखन नाह पार करैमे जे अनुकूलता रहै छै ओ हवाक गति तेज रहने वा धारेक गति तेज रहने नाहकेँ पार करब तँ उकड़ू भाइए जाइ छइ।

..हलाँकि ओहो उकड़ू कि कोनो एके रंग होइए, अनेको रंगक उकड़ू अछि। जँ केतौ हवा तेजे रहल आ धाराक गति धीमी रहल तँ ओ एक तरहक भेल, तहिना जँ केतौ धाराक धार तेजे अछि आ हवा अनुकूल अछि तँ ओइमे अनुकूलता बेसी आबि जाइ छइ, आ नहि जँ सोलहन्नी दुनू अनुकूल रहल तँ आरो बेसी अनुकूलता आबि जाइ छइ। तहिना जँ विधाताक बाम जकाँ दुनू प्रतिकूल रहल तखन कट-कट-विकट स्थिति बनि जाइ छै, जैठाम पार हएब कठिन होइ छै मुदा असम्भव नहि, सम्भवो छइ।

जहिना धारक सन्मुख धारा उग्र तहिना हवो उग्र रूपमे लपटए लगल। मलाह बुझि गेल जे आब नाह डुमबे करत। यात्रीकेँ मलाह चेतबैत बाजल-

“भाय साहैब, नाह डुबि जाएत। हम कुदै छी।”

जहिना छनमे छनाक कोनो घटना कए दइए तहिना यात्रीक मनमे भेलैन।

..भयातुर होइत यात्री बजला-

“भाय हमरो जान बँचाबह। हमरा हेलए नइ अबैए।”

ओना, नाह अखन डोले-पत्ता कऽ रहल अछि, एको घोंट पानि नइ पीलक अछि। अपना जनैत मलाहक मन अखनो नइ थरथराएल छेलै मुदा ईहो तँ बुझले छै जे अनाड़ी यात्री जेते धारक धाराक करनी आ हवाक करनीसँ नइ डुमैए तइसँ बेसी अपना करनीसँ डुमैए। माने अनाड़ी यात्री तेते नाहकेँ डोलाएत जे एकभग्गू काइए देत।

..मुदा एहनो तँ यात्री छैथे जे नाहक मर्म, हवाक मर्म आ धाराक मर्मकेँ जनै छैथ...।

मलाह बाजल-

“भाय साहैब, जिनगीक धार उकड़ू-सुकड़ू दुनू चलैए। हम तँ बारहेअना डुमब, मुदा अहाँ बत्तीसोअना डुमब किए तँ अहाँकेँ पढ़ैओमे बहुत खर्च भेल अछि।”

❑ **साभार : मुड़ियाएल घर**

पुरनी भौजी

बीस दिन बरिसाइत बितनौं झूर-झार आम पाकब शुरू नइ भेल अछि।

बिनु बर्खाक गरै जकाँ मेघ रूखि पकड़लक। दसो पोता-पोतीकेँ नेने पुरनी भौजी रोहनिया आमक झमटगरहा गाछ लग बैस दसोकेँ कहलखिन-

"जे पहिने पौत से मीरा, जे दोसर पौत से दोहल, जे तेसर पौत से तेहल आ जे चारिम पौत से चौहल।"

पुरनी भौजीकेँ तीनटा बेटा छैन। बिनु गहबर गेनौं पोता-पोतीक ढबाहि लगल छैन। बच्चाकेँ देख माइक ममता तँ सोभाविक अछि। बाप तँ भरि दिन बोनाएले रहै छथिन।

दस बर्खक पोता, जे मिड्ल स्कूलमे पढ़ैए; टेंटियाह सुग्गा जकाँ टाँहि-दे पुछलक-

"मीरा माने की भेल, दाइ?"

बिहाड़ि तँ बिड़हा गेल मुदा हवाक सिहकी उठल। ढेनुआर जकाँ धऽ कऽ भड़भड़ा गेल। के पहिने पौलक तेकर ठेकाने ने रहल।

❑ **साभार : बजन्ता-बुझन्ता**

अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आँगन बहाड़ि बाढ़ैनकेँ कलपर धोइ पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलैन। हाथ-पएर धोअल बुझि नजैर फूल तोड़ैपर गेलैन। ओना, लालकाकी एहेन नियमित छैथ जे जहिना खढ़ लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छैथ तहिना दिन भरिक काजोक छैन। मुदा मन पाड़ैक जरूरत अइले रहि जाइ छैन जे पति गाममे छैथ कि नहि। गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइ छैन आ नइ रहने कमि जाइ छैन। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलैन। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उतारि कल दिस बढ़ली। कलक बगलेमे रंजनी-गन्धापर हाथ दइते छेली आकि नजैर अपराजितपर पड़लैन। मेल-पाँच करैक विचार मनमे अबिते लालकाकी रजनी-गन्धासँ अपराजित दिस बढ़ली। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलैन। आँखि पड़लैन फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देख विचारली जे पाँचटा बेलीमे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेली कि नजैर पतिपर गेलैन। पतिपर नजैर पड़िते मन दुखाए लगलैन। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कण्डीशन गाड़ीमे बैस सराफा बजार जा हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गाड़ामे लटकैबतौं। मुदा तेहेन भेला

जे जखन सरकारी दरमाहा भेटए लगलैन आ कहलयैन जे साइकिल कीनि लिअ सुभितगर हएत, तँ कहलैन जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जँ खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलश्तर करब, तैयो ने जुटत। तइसँ नीक पएरे। कहलैन एक मानेमे नीक...।

मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ उतरलैन नहि। मन गेलैन दोसर दिस। सभटा पोथी बर्खामे भीज-भीज सड़ि गेलैन, जखन घरे चुबै छेलैन तखन जँ सड़िए गेलैन तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखन घर बनौलैन तखन किए ने फेर किनलैन। जइ घरमे पोथी नइ रहत ओ घर केहेन हएत? लालकाकीक क्रोध कमलैन। क्रोध कमैक कारण भेलैन अपन काज मन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ बेर धरि केकरा-ले करै छी, परिवारे-ले ने। फेर तामस मुड़ि गेलैन, कहैले आठ घन्टा ड्यूटी करै छैथ, चारि घन्टा बाटेमे लगै छैन। अदहा काज जँ सम्हारि कऽ नइ रखबैन तँ पारो ने लगतैन। एहेन पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैथ? फुलडाली रखिते लालकाकीक मनमे एलैन, एक विहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बैसैमे अखनो बहुत बाँकी अछि। हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा-ठाँउ कऽ चूल्हि-चिनमार दिस बढ़ली। घर-निप्पा रखि अर्घासरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि घड़ी दिस देखली। अखन तक समय आ काजमे तल-बितल नइ देख मनमे खुशी भेलैन। फेर नजैर पतिपर गेलैन। किड़ी आँखिमे पड़ने जहिना करुआ जाइ छै तहिना लालकाकीक मन करुआ गेलैन। बुदबुदेली-

"एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू-मुहेँ ससरत?"

बुदबुदाइते लालकाकीक मनमे उठलैन आन दिन जकाँ जारैन सुखाएल नइ अछि। भानसमे देरी लागत, से नइ तँ पानि चढ़ा पहिने चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजरल रहत तँ कनी देरियो लगने समयपर भऽ जाएत।

बाड़ी पहुँच पतरका जारैन सभ बीछ कऽ चूल्हि लग आनि कऽ रखली। चूल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे राखए लगली। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लैन। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बुझि पड़लैन। मनमे एलैन, ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छइ। फेर मन पतिपर गेलैन। उमैक कऽ मन कहलकैन, आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलैन। हृदए बिहुँसि गेलैन। 'जइ मर्दकेँ आनि नहि आ जइ बरदकेँ पानि नहि, ओ अनेरे गाम घिनबैले किए जीबैए? मन पड़लैन दुरगमनियाँ पिढ़ी। जहिना बाबू सतपुड़ैन खोधाएल कटहरक पिढ़ी देलैन आइ धरि ओइपर बैस भोजन करै छैथ...।

थारी साँठि लालकाकी पंखा नेने छोटकी पिढ़ीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैले पढ़ुआकाका दिस देखए लगली। मगन भऽ पढ़ुआकाका भोजन करए लगला। देहांगक सिरखार देख लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन-काल जे बजबे ने करता हुनका कहले की जाए। तँए लालकाकी चुप्पे रहली।

कपड़ा पहिर पढ़ुआकाका घरसँ निकैलते रहैथ कि आँगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलैन। पत्नीक काज देख मन मानि गेलैन जे सिपाही जकाँ छैथ। मनमे खुशी उपकलैन। पान खा आगू-आगू पढ़ुआकाका आ पाछू-पाछू लालकाकी आँगनसँ निकैल डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआकाका पुछलकैन-

"किछु कहबोक अछि?"

लालकाकी कहली-

"अपन तनदेही राखू।"

दुनू गोरे दुनू दिस विदा भेलैथ। मुस्कियाइत पढ़ुआकाका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घुमि कऽ देख डेग तेज करैत आगू बढ़ला। नाकमे सुरसुरी

लगलैन। भेलैन जे छिक्का हएत। बामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगला। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नहि। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द 'तनदेही'पर गेलैन। पत्नीक मुहसँ निकलल शब्द, विशारद पास पढ़ुआकाकाकेँ ओझरा देलकैन। पाछू घुमि पत्नी दिस तकलैन तँ देखलैन जे सड़कसँ अँगनाक घुमौनक भौकपर पहुँच गेल छेली। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेली। कोकिलक कण्ठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआकाकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलैन। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चन्दन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलैन केतए-सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नइ केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलिऐन कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किए ने बजनिहारिए-सँ पुछि लिऐन। ओहो तँ आन नहि, अर्द्धांगिनीए छैथ। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैले दुनूक सहयोग तँ बरबैरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ आ एक सीमाक भीतर अपने छी। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रूपैआ हाथमे दऽ दइ छिऐन। मुदा ओइ रूपैआकेँ नचबै तँ वएह छैथ। तैसंग पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छैथ...।

पढ़ुआकाका जेते दुनू गोरेक भीतर झाँकै छला तेते हटल-हटल बुझि पड़ैन। मन वौआ गेलैन जे पति-पत्नीक, पुरुख-नारी आ स्त्री-स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबा चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलैन। किए ने दुनू गोरे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलैन। गामक सीमो टपि गेला। विद्यालयक मुरेड़पर नजैर गेलैन, सवुर भेलैन जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंतीस सालक अभ्यास तँए थकान नइ बुझि पड़ैन मुदा...।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जैठाम ओसारपर चपरासी बैसैत तइ सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआकाका रहैथ कि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखलैन। सीढ़ी लग पहुँच पढ़ुआकाका

आगू तकला जे चपरासी घुमि कऽ अबैए आकि नहि। मुदा नै देख काकामे पौरुख जगलैन। मनमे उठलैन अखन तँ सेवानिवृत्तो नहियेँ भेलौं हेन, तखन किए अनकर सेवा लइले मुँह ताकब! सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेला मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छेलैन आगूसँ घेर लेलकैन। जे चपरासी 'बाबा' कहैए, ऑफिसोक सभ 'भैये-काका' कहै छैथ मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए? जँ से नहि, तँ परिवारमे किए कहल जाइए? नजैर ठनकलैन, अगर बीस बर्खक अधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उम्रे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए..! पढ़ुआ-कक्काक मन हल्लुक भेलैन। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलैन...।

हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़ुआकाकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतैन। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसैर गेल छल।

स्टाफ-रूम पहुँचते पढ़ुआकाकाकेँ एक नहि अनेक तरहक खटका खटकए लगलैन। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहैन। मुदा कुरसीपर बैसते तह दैत मनसँ हटौलैन। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़ैन। किछु व्यंग्य-वाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहैथ तँ ओहन बेवहारे नै छेलैन। चालिसँ थाकल रहबे करैथ, आँखि झल-फलाए लगलैन। गमे-गम नीनो आबए लगलैन। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलैन। पढ़ुआकाकाकेँ आँखि मूनल देख इशारामे उतरीक चर्चा हुअ लगल। मुदा पढ़ुआ-कक्काक आँखि बन्न, तँए किछु बुझबे ने करैथ।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजेमे ट्रेन अछि तँए स्टाफ सबहक बीच चिलमिलक कुचकुची जकाँ पसैर गेल, सबहक देह-हाथ चुलचुलाए लगलैन। कुरसीक पौआ सबहक अवाजसँ पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगला, ऑफिसक बड़ाबाबू आबि पढ़ुआकाकाकेँ कहलकैन-

"अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?"

कहि बड़ाबाबू ऑफिस दिस बढ़ि गेला। ठाढ़े प्रणाम करि कऽ संगियो सभ निकैल गेलैन। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआकाका असकरे कोठरीमे बैसल रहला। बड़ाबाबूक भाषापर नजैर गेलैन। आन दिनक जे बोली रहै छेलैन, तइ हिसावे औझुकामे किछु करुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। काल्हि धरि सहयोगी सभ अरियाति कऽ पहिने विदा कऽ दइ छला तेकर बादे कियो जाइ छला..! पढ़ुआ-कक्काकेँ नौकरीक एहसास भेलैन। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा सभसँ की सम्बन्ध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइ छेलए आ बजै छेलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइ छल। जे पहिने लोटा पकैड़ पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझै छल। मुदा आइ की देखै छी? शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैए! केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहिए-सँ विद्यालयक सरकारीकरण भेल तहिए-सँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना, गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहिन भऽ गेल। ओना, महिनवारी वेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। मासे-मास नइ भेट सालक चुकती सालमे हुअ लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नहि, अपन काज बुझै छेलौं। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे केतौ बन्हनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआकाका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बोही आगूमे बढ़ा देलकैन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पैत टुटैए तहिना पढ़ुआकाकाकेँ नौकरी टुटि रहलैन हेन। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआकाका हतास भऽ गेला। मनमे उठलैन सभ किछु हरा गेल। जेते पढ़ने छेलौं

तइमे-सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नइ भेल। आ जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल! की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि..?

आगूमे प्रश्न ठाढ़ होइते पढ़ुआ-कक्काक मोन पड़लैन, अपना संग किनको हाथो पकड़ने छिऐन किने? दू परानीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै, ओ हमरा बुते कएल हएत? अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छला ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छेलिऐन। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत? की जिनगीक एक्कोटा व्रत निमाहै-जोकर हम नइ छी..?

द्वन्द्वमे पड़ल पढ़ुआ-कक्काक छाती दलकए लगलैन। तैबीच चपरासी आबि टोकलकैन-

"कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौ।"

अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआकाका कोठरीसँ निकैल पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठैन। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओंगैठ कऽ बैस गेला। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलैन। जेबीसँ निकालि पढ़ए लगला। सूचना देल जाइत अछि, तेसर मासक अन्तिम तिथिसँ सेवा-मुक्त होएब। ..निचला पाँती पढ़ौ ने लगला, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेला। मुदा जहिना नदीक किनछैरक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत तहिना पढ़ुओ-कक्काक पएर आगू-पाछू हुअ लगलैन। मनक लहैरसँ पएर तनेलैन। आगू बढ़ए लगला। विद्यालयक फाटक लग पहुँच पाछू घुमि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहैन। फुरलैन, जखन जीबैक सभ रस्ता बन्न भऽ रहल अछि तखन मरैयोक तँ ढेरी उपय अछिए। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत!

जीबैले अपराध करि कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैए मुदा मृत्यु-ले अपराध...।

बीच रस्तापर आबि पढ़ुआकाका क्रोधक लहैरमे आरो ओझरा गेला। मुदा मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते फुरलैन, जखन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइए देलक तखन एक्केटा उपय अछि जे जिनकर हाथ पकैड़ भार नेने छिऐन तिनका लग पहुँच कहिऐन जे अखने दुनू परानी हरिद्वारक रस्ता धरू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मन्दिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सूनब आ अपनो नचारी कहबैन। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब...। तखने एकटा छुछुनैर दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआइत टपैत रहए, कि पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। ताबे छुछुनैर ससैर कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलैन जे छुछुनैर पैरमे काटि लेलक। झूकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगला। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलैन। मन मानि गेलैन जे छुछुनैर काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलैन। काजक बेर रहने सभ छिड़ियाएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलैन। सभ चलि गेल छला। मनमे एलैन छुछुनैरक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलैन। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। अपन बीख अपना बुते कहाँ झड़ै छै, तँ की ऐठाम पएर पटैक कऽ मरि जाएब आकि जेतए मनतरिया भेटत ओतए जाँच करा लेब। मुदा असगरे पढ़ुआकाका, तँए मनमे उठलैन- ताधैर अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे... दु... एक...।

मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुहसँ फुकि दैथ। अबैत-अबैत गामक सीमापर आबि गेला।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढ़ुआकाका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लालकाकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहैन। किसाने परिवार देख लालकाकीक पिता कुटुमैती केलैन। ओना, पढ़ल बर पाबि दुनू परानीक हृदए जुड़ा गेल रहैन

जे लक्ष्मीक संग सरस्वतियो छैन।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढ़ुआकाकाकेँ सीमापर अबिते बुझि पड़लैन। सौनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकैन। पानि जकाँ बुधि पसैर गेलैन। जीवित छी आकि मुइल से होशे ने रहलैन। थुस-दे बैस रहला। मन पड़लैन अकाजक हएब। दुनियाँ तँ काज करैबलाक छी। की मृत्युक शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक अछि, सेहो नहियेँ हएत। जिनगीमे कहियो जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा व्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि..! पढ़ुआ-कक्काक मन राँइ-बाँइ भऽ फटि गेलैन। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिस बहए लगलैन। हृदए पसीज गेलैन। मन पड़लैन अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि ओइसँ हटल रखैमे केकर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छेलिऐन। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलिऐन। अपनो एते होश नै केलौं जे साए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़पर कानून अकाजक घोषित कऽ देत! आब शेष जिनगी केना चलत? अपनो ने छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं! निराश मनमे सासुर मन पड़लैन। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा-ले रूसैए! मुदा सासु मन पड़िते पढ़ुआकाका मधुआए लगला। जँ लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ केतए करत? मन आरो पघिल गेलैन। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छैथ। मुदा फेर मनमे उठलैन जे रूसबो तँ केतेको रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलैन जे सियानी रूसबसँ शुरू करब आ जेते निच्चाँ सुतैर जाएत तेते निच्चाँ धरि आबि अँटैक जाएब। फुरफुरा कऽ उठि पढ़ुआकाका घर दिस विदा भेला। चारूभर चकोना होइ छला

जे कियो देखए नहि। मुदा से सुतरलैन। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हरि कऽ बजला-

"ई घर मनुखक रहैबला छी! एमहर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओमहर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि..!"

कहि, रूसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि पड़ि रहला। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देख नेने रहैन। हँसुआ-खुरपी बाड़ीए-मे छोड़ि लालकाकी आँगन दिस बढ़ली तँ किछु अवाज सुनि पड़लैन, मुदा नीक नहाँति नइ बुझि सकली। ओना, लोकक दुआरे पढ़ुओकाका मुँह दाबिए कऽ बाजल छला। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजला-

"एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाइर करैबला... ।"

पढ़ुआ-कक्काक बात लालकाकी बुझि गेलखिन जे केतौ किछु भेलैन हेन। दू बीघा हटल अवाजमे लालकाकी बजली-

"एलौं।"

'एलौं' सुनि पढ़ुआकाकाकेँ सवुर भेलैन। आ लालकाकी मने-मन सोचै छेली जे पुरुखक लटारम्भ की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी वौस कऽ शान्त कऽ देबैन। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलैन।

पत्नीक अवाज सुनि पढ़ुआ-कक्काक छाती दहैल गेलैन। नाँगैर सुरैर कऽ विद्यालय घर धरौलक! केतौ-के ने रहलौं। मन गरमेलैन। बमैक कऽ बजला-

"काल्हिए विद्यालय जा लिखि कऽ दऽ देबै जे आइए-सँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हेतै तँ मनिआर्डर कऽ रूपैआ पठा देत, नइ तँ नै पठबऽ।"

जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत तहिना पढ़ुआ-कक्काक लगले मन थलथला गेलैन। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल

अछि..? विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बुझि रहलौं हेन? आकि अर्थशास्त्र पढ़ैक अभाव रहल?

पढ़ुआ-कक्काक लग आबि लालकाकी पुछलकैन-

"चूरा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला रखने छी, नेने आएब?"

पत्नीक बात सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन मचकी जकाँ झूलए लगलैन। मुदा आस लगिते मन दोसर दिस भऽ गेलैन। खिसिया कऽ बजला-

"हूँह! चूरा-तूरा नै खाएब। रक्‌खू अपन चूरा-तूरा!"

मुस्की दैत लालकाकी पुछलखिन-

"हमरे छी, अहाँक नइ छी?"

पत्नीक बात सुनि मन सिहैर उठलैन। बेरुका सुरूजक रौद जकाँ पढ़ुआ-कक्काक गरमी कमलैन। बजला-

"एकटा गप कहए चाहै छी?"

"भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धूराएल अछि, पहिने हाथ-पएर धोने अबै छी तखन अन्डी-तेलसँ घुट्ठियो ससाइर देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदिकाल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सूनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहैरक गप छी।"

लालकाकीक गप सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन आगिमे पकैत भँट्टा जकाँ असुआ गेलैन। असुआइते लजबिजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलैन। कल पड़ल रोगी जकाँ पतिकेँ देख लालकाकी सहैट कऽ निकैल, ठोकले बाड़ी पहुँच गेली।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआकाका बिसैर गेला। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलैन। किसानक बेटी लालकाकीकेँ खेतीक सोल्होअना लूरि छैन, ओना, अन्नक खेती तँ बटाइ लगा नेने छैथ, मुदा

पाँच कट्ठा चौमास आ गाछी-बिरछीक सेवा टहल अपने करै छैथ। दूटा गाइयो पोसियाँ लगौने छैथ, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइ छैन। पक्का घर बना सभ बेवस्थो केने छैथ।

लालकाकी हँसुआ, खुरपी आ कोदारिकेँ आँगनमे रखि, झाड़ू लऽ कऽ अँगना बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पिबते रहैथ आकि मन पड़लैन पतिक रूसब। फेर मन पड़लैन अपन जिनगी। जाधैर माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोरेक इच्छा सदिकाल यएह रहैन जे धिया-पुता करवनो कानए नहि। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बुढ़ी–सासु–सदिकाल कहैत रहै छेली जे कनियाँ अँगनाक मालिक स्त्रीगणे होइ छैथ। तँए आँगनमे सदिछन बिआहक मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नहि जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बुझि सती-धर्मक पालन करैत एली। मन पड़लैन सावित्री, दमयन्ती...। करुआ कऽ किछु बाजब उचित नहि। तैबीच दरबज्जा परहक अवाज सुनलैन।
“हे भगवान, जानह तूँ।”

मने-मन पढ़ुआकाका अपने सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। आमोक गाछी तेहेन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल मोजरबे ने करैए, तँ गोटे साल बिजलोके-मे जरि जाइए। गोटे साल बिहाड़िए-मे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहेन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे केते जीब सकै छी..?

दरबज्जापर लालकाकीकेँ अबिते पढ़ुआ-कक्काक टुटल मन कलैप उठलैन। गोरथारीमे बैस लालकाकी कहलखिन-

“पएर सोझ करू।”

लालकाकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर

बनैत तहिना पढ़ुआ-कक्काक बोल निकललैन-

"पएर नै टटाइए, हृदैक बेथा छी।"

पतिक बात सुनि फरैक कऽ चौकीपर सँ उठि लालकाकी मधुआएल स्वरमे बजली-

"साँचे स्त्रीगण सबहक-मुहेँ सुनै छी जे पुरुख नँगरकट होइ छैथ! कुत्ता जकाँ सदिकाल नाँगैर टेढ़े रहै छैन।"

"जे बुझी।"

"तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुर जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक औत।"

"चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझहे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोरेक एक्के वृत्त करैए, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।"

पढ़ुआ-कक्काक बेथा सुनि लालकाकीक मन कानि उठलैन। जाधैर ओछाइनोपर पड़ल रहता ताधैर सत्ती साध्वी तँ...।

लालकाकीकेँ चौकीपर बैसते पढ़ुआकाका आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

"सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।"

'अहाँ छी' बजिते पढ़ुआकाकाकेँ मन पड़लैन छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन-

"भारी भूल भेल जे अहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित अहाँ-मुहेँ सूनब।"

अवसर पाबि लालकाकी पुछि देलखिन-

"अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी

केते दिन जीब? जेते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब? राजा-दैवक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब। अखन दुनू परानी जीबै छी, मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछैल कऽ चौकीपर ठाढ़ होइत पढ़ुआकाका बजला-

"नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जखन अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तखन तँ... ।"

❑ **साभार : अर्द्धांगिनी**

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

जिगेसा
लेहाज
जानक मोल
समर्पण
स्तब्ध

भोरक झगड़ा
शालीनता
पान
पवनक विवेक
हरवाहि

समरथाइक भूत
समता
सुखाएल सूरत
खजाना
मौसी

कर्जं : 2
टुटल मनक जुटान
ऐँठ साड़ी
अस्तित्वक समाप्ति
जाति नहि पानि

विदाइ
कर्तव्यपरायन सुगा
निशाँ
दान-दैछना
माइक वचन

मथाहाथ
पाइक मोल
गंजन
नमहर फेरा
अपन काज

बेटपन
उमेद
एकोटा ने
कथनी नै करनी
मुसाइ पण्डित

घरवास
भूल
बत्तीसोअना
पुरनी भौजी
अर्द्धांगिनी

पेटगनाह	डीहक बटबारा
गंगा नहेलौं	मूलधन
बकठाँइ	छूआ
गुलेती दास	लफ साग
खर्च	नहरकन्हा
डॉक्टर हेमन्त	अपन सन मुँह
मनुखक मूल्य	पाप आ पुण्य
तीन जुगिया भाय	चोरक चोरबती
आश्रम नहि सोभाव बदली	मातृभूमि
मायराम	कटा-कटी
शुभचिन्तक	हरदीक हरदा
विधवा बिआह	बेरपर
वैष्णवी भगवती	झगड़ाउ-झोटैला
प्रेमी	फॉगु
शंका	बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक
मुइलो बिसेबैन	उलबा चाउर
प्रतिभा	पतझाड़
केतौ नै	धरम काँट
हमर कोन दोख	तिलासंक्रान्तिक लाइ
असगरे	कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भौँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

टूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी
सुभद्रा
देखल दिन : 1
पड़ाइन
चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी
भोलानाथ बाबा
घटक बाबा
इजोरिया राति
भँसैत नाह

शम्भुदास
शिवजीक डाक-बाक्
सजाए
छुटि गेल
कनफुसकी

फाँसी
गति-मुक्ति
बजन्ता-बुझन्ता
अप्पन हारि
कोसलिया

मुसहैन
बिसाँढ़
मत्हानि
तेरहो करम
बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख
गैत-वीध
बेवहारिक
ठका गेलौं
साए कच्छे

करिछौन लाली
बलजोर
गति-गुद्दा
कलम हानि कऽ
अकाल

भैंटक लावा
डंका
काल्हि दिन
इमानदार घूसखोर
सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9 789388 421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452